आधुनिक संस्कृत अनूदितकाव्य : कथ्य एवं शिल्प

संस्कृत विषय में पी०एच–डी की उपाधि
हेतु प्रस्तावित
शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा
2015

निर्देशिका

प्रो. श्रीमती अगम कुलश्रेष्ठ

संस्कृत विभाग, कला संकाय

शोधकर्त्री

नेहा वार्ष्णेय

एम.ए., बी.एड.

वर्ग– साहित्य

संस्कृत विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा।

अध्ययन का उद्देश्य

आधुनिक संस्कृत साहित्य में आत्मकथा, जीवनी, गज्जलिका कव्वाली, गीत, उपन्यास, लघुकथा, यात्रावृत्तान्त, हास्य–व्यंग्य, चुटकुले, प्रहेलिका, हाइकू, तान्का, सीजो आदि नवीन काव्य विधाओं का सृजन हो रहा है। इस शताब्दी की सर्वाधिक उल्लेखनीय प्रवृत्ति है विविध भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य का संस्कृत में बृहद् मात्रा में अनुवाद। प्राचीन समय में मौलिक ग्रन्थों का सृजन हुआ। तदनन्तर समय एवं आवश्यकतानुसार रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता, अभिज्ञानशान्कुतल, मेघदूत, पंचतन्त्र, हितोपदेश आदि ग्रन्थों के अनुवाद, अन्य अनेक भाषाओं में हुए। आधुनिक समय में संस्कृत के इन प्राचीन ग्रन्थों का अनुवाद व्यापक स्तर पर हो रहा है।

अनूदित शब्द से अभिप्राय है कहा हुआ, वर्णन किया हुआ, अनुवादित, तर्जुमा किया हुआ, भाषांतरित आदि। इस प्रकार अनूदित शब्द से तात्पर्य हुआ पीछे कहा हुआ या भाषातंरित किया हुआ । (हिन्दी शब्द सागर – पृ.सं. 223, हिन्दी शब्दकोश – पृ.स. 32)

अनूदित पाठ में मूलनिष्ठता, पठनीयता, बोधगम्यता और प्रभावोत्पादकता पर बल दिया जाता है। वस्तुतः अनुवाद विधा और अनूदित कला है। अनूदित साहित्य में मूल कृति की आत्मा को जीवित रखा जाता है अर्थात लक्ष्य भाषा का विशेष ध्यान रखा जाता है। अनूदन की सृजन प्रक्रियाओं में तटस्थता, ईमानदारी तथा सेवाभाव का सौन्दर्य विद्यमान रहता है इसीलिये अनूदित सामग्री को लक्ष्य भाषा से अलग करके नहीं देखा जा सकता। भारतवर्ष विभिन्न संस्कृतियों का देश है। यहाँ विविध भाषाओं में साहित्य का सृजन किया जा रहा है परन्तु सभी भाषाओं का ज्ञान होना सम्भव नहीं है इसलिये अनुवाद विधा के माध्यम से दूसरी भाषा के साहित्य को अनूदित कर उसका अध्ययन किया जा सकता है।

अनूदित सामग्री चाहे साहित्यिक हो या साहित्येतर; वह निश्चय ही किसी न किसी ज्ञान धारा को लेकर बहती है जिससे विचारों में वृद्धि होती है। अनूदित कृति के माध्यम से ही अन्यान्य समाजों, प्रदेशों तथा देशों के ज्ञान–विज्ञान का तथा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक उत्थान का बोध होता है इसलिये अनुवाद कार्य एक देश की संस्कृति को दूसरे देश की संस्कृति से जोड़ने में सहायक होता है क्योंकि अनुवादक को दोनों ही संस्कृतियों और भाषाओं का ज्ञान होता है। उसे मूल पाठ के प्रति निष्ठा, अनुवाद की सटीकता, भाषा की शुद्धता शैली की सौन्दर्यता और अर्थवत्ता आदि गुणों को बनाये रखने के लिये मूल तथा लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। अनूदित साहित्य आधुनिक युग की माँग की उपज है। अनुवादक को मूल भाषा तथा लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार होना चाहिये।

अनूदित रचना में एक भाषा से दूसरी भाषा में व्यक्त करने की वह प्रक्रिया इतनी सरल नहीं है जितनी कि यह देखने में लगती है क्योंकि प्रत्येक भाषा एक विशेष प्रकार के परिवेश में पनपती है। अतः उसकी अपनी विशेषताएँ होतीं हैं, जैसे –शाब्दिक, आर्थिक, रूपात्मक, वाक्यात्मक, मुहावरे आदि से सम्बन्धित तथा सांस्कृतिक आदि।

अनूदित रचनाओं का स्वरूप विधाओं के अनुसार बदलता रहता है परन्तु मूल उद्देश्य तो एक ही होता है अर्थात् मूल रचना के कथ्य, संवेदना, प्रभाव आदि को उसी रूप में लक्षित किया जाता है जैसे वह मूल रचना में लक्षित होते हैं। मूल कृति की भाषिक संरचनाएँ इतनी कठिन होतीं हैं कि उसे अनूदित भाषा में ज्यों का त्यों नहीं

लिखा जा सकता उसके लिये कई प्रकार से जोड़–तोड़ एवं परिवर्द्धन–संवर्द्धन करने पड़ते हैं। उसे मूल भाषा के अनुरूप ढालना पड़ता है। अनुवादक स्वार्थ के स्थान पर परार्थ के वशीभूत होकर अनूदित कार्य करता है।

मौलिक लेखन में जहाँ स्वानुभूति होती है वहीं अनूदित लेखन में परानुभूति अभिव्यक्त होती है क्योंकि मौलिक लेखन में कवि अपने भावों को, अपने अनुभवों को व्यक्त करने में पूर्णतः स्वतन्त्र होता है। अनूदित लेखन में कवि को दूसरे के अन्तस् में झाँकना पड़ता है। स्व को मिटाकर दूसरे के अनुभवों को जीना पड़ता है। इंच भर भी इधर–उधर होने पर मौलिक भाषा से भटकने का भय बना रहता है। **वस्तुतः अनूदित लेखन रूपी संजीवनी न हो तो साहित्य की धरोहर का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा।** अनूदित कृति को स्वतन्त्र रचना के रूप में ग्रहण किया जाये तो अनूदित कृति स्वतन्त्र रचना–कर्म नहीं है किन्तु वह एक स्वतन्त्र रचना सी तो प्रतीत हो सकती है। ग्लोबलाइजेशन, या विश्व परिवार या वसुधैव कुटुम्बकम्, विश्व साहित्य तथा वैश्विक दृष्टि से अनूदित साहित्य वैयक्तिक परिधि से उभरकर समष्टि परिधि में आ गया है। अनूदित लेखन अनुवादक की ख्याति को पूरे संसार में फैलाने में बड़ा ही सहायक है।

किसी भी भाषा तथा साहित्य के विकास में अनुवाद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुवाद के माध्यम से ही व्यक्ति विश्व को समझता आ रहा है। जर्मन साहित्यकार गेटे ने कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का अनुवाद पढ़कर ही विश्व साहित्य की परिकल्पना की। अनूदित साहित्य के माध्यम से ही प्रेमचन्द, टैगोर, टॉलस्टाय, निराला, तुलसी, जयशंकर प्रसाद आदि की रचनाएं अनूदित कृति के रूप में संसार भर में चर्चित हुई।

अनूदित भाषा के माध्यम से ही एक व्यक्ति अन्य भाषा के साहित्य से जुड़ सकता है। अनूदित चिन्तन की भी अपनी एक स्वस्थ परम्परा है। सर्वप्रथम हमें बाइबिल, कुरान, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता एवं रामायण आदि की अनूदित कृतियाँ मिलती हैं जिसमें बाइबिल के नये रूप न्यू टेस्टामेण्ट का पर्याप्त भाषाओं में अनूदन हुआ। बाइबिल को उर्दू भाषा में सन् 1843 में बेन्जामिन शुल्तजे ने अनूदित किया। 'कुरान' के भी कन्नड भाषा, अंग्रेजी भाषा, बंगाली भाषा में अनूदित रूप प्राप्त होते है। रवीन्द्रनाथ टैगोर को उन्हीं के द्वारा बांग्ला से अंग्रेजी में अनूदित गीतांजलि के लिये नोबेल पुरस्कार (1913 में) प्राप्त हुआ है। आधुनिक लेखन में गीतांजलि को संस्कृत आंगिक रूप में भी श्री पुल्लेल रामचन्द्रुडु, श्री कालीपदतर्काचार्य, श्रीराम दवे तथा के. राम कृष्णवारियर ने अनूदित किया है।

अनूदित साहित्य की शक्ति अपरिमेय और अजेय होती है। भारतीय साहित्य में कुछ कालजयी कृतियों के अनूदित संस्करण मूल कृति का विश्वास दिलाती हैं यथा – शरत चन्द्र कृत देवदास, विराजबहू, बंकिमचन्द्र कृत आनन्दमठ, रवीन्द्र ठाकुर कृत गोरा और महाश्वेता देवी कृत जंग के दावेदार आदि कृतियों के अनूदित पाठ प्रामाणिक अनुवाद के उदाहरण हैं। अन्य भाषाओं का प्रभाव संस्कृत में प्रतिबिम्बित करने वाले अनेक विद्वान् हुये हैं। सम्भवतः उमर खैय्याम की रूबाइयों को सर्वप्रथम संस्कृत में पदबद्ध अनूदित करने वाले स्व. गिरिधर शर्मा जी थे जिन्होंने 'अमर सूक्ति सुधाकर' नाम से इसे अनूदित किया। प्रो. प्रेमनारायण द्विवेदी जी ने तुलसीदास के रामचरितमानस और कवितावली को संस्कृत पद्यों में अनूदित किया। आधुनिक समय में अनूदित काव्य प्रगतिशील है और संस्कृत की आधुनिकता में सहायक है।

मुझे संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं का ज्ञान है अतः प्रस्तावित शोध विषय के लिये उन्हीं ग्रन्थों को लिया गया हैं जो हिन्दी से संस्कृत में अनूदित हुये हैं। यथा–1. श्रीमद्रामचरितमानसम, 2.कवितावली, 3.निर्मला, 4. ध्रुवस्वामिनी, 5.विजयपर्वः, 6.देशहत्या,7. मायाजालम्, 8.मेघवाहनः आदि।

कथ्य या विषय–वस्तु; साहित्य या काव्य का प्राण है क्योंकि लेखक अपने जीवन की घटनाओं, अपने युगीन वातावरण और सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर लिखता है और इन्हीं सब विषयों को वह अपनी रचना में व्यक्त करता है। वस्तुतः कथ्य से तात्पर्य है – रचना का अर्थ या मूल उद्देश्य। **कथ्य संस्कृत में वह विशेषण है जिसका सम्बन्ध कथावस्तु से होता है।** कथ्य के पर्यायवाची शब्द हैं –वर्णनीय, कथ्, कथनीय, वचनीय, वर्ण्य आदि। **अनूदित साहित्य के अन्तर्गत यदि कथ्य की बात की जाये तो इसमें भावगत अन्तरण, शब्दगत अन्तरण, अर्थगत अन्तरण अथवा कलात्मक सम्प्रेक्षण आदि को रखा जाता है।**

मानक हिन्दी कोश में 'कथ्य' शब्द –'संस्कृत की 'कथ्' धातु में 'यत्' प्रत्यय जोड़ने से निष्पन्न होता है। 'कथ्' का सामान्य अर्थ है –कहना। इस प्रकार 'कथ्य' का अर्थ हुआ–कहने योग्य। जो कहने योग्य हो, वह कथ्य है। अंग्रेजी में कथ्य के लिये content(विषय), worth saying(विषय–वस्तु),worth narrating(कहने योग्य, विवरणीय) आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। इसके अतिरिक्त कथ्य से सम्बन्धित कुछ अन्य शब्द भी प्रचलित है जैसे –कथा, कथावस्तु आदि।

साहित्य में कथ्य वह तत्त्व है जो उसमें वर्णित घटनाओं को आधार प्रदान करता है, जिसका उचित स्वरूप स्पष्ट होता है। किसी भी कृति की सार्थकता कथ्य की सार्थकता में ही निहित होती है। कथ्य में अनुभूति का स्थान महत्त्वपूर्ण है। बुद्धि दर्शन, चिन्तन, ज्ञान–विज्ञान सभी को जीवन में आत्मसात् करना पड़ता है तभी शक्तिशाली कथ्य की सृष्टि होती है।

आधुनिक संस्कृत श्रव्य अनूदित काव्य, जिनका पीछे वर्णन किया गया है उनमें मुंशी प्रेमचन्द कृत निर्मला एक सामाजिक हिन्दी उपन्यास है इसका संस्कृत अनूदन प. श्री राम दवे ने किया है। इसके कथनीय बिन्दु निम्न है

1. सहृदया निर्मला एवं नारी की सामाजिक स्थिति
2. स्त्रियों की आभूषण प्रियता
3. दहेज प्रथा एवं अनमेल विवाह
4. दाम्पत्य जीवन एवं मनोवैज्ञानिकता
5. विधवा समस्या
6. परिवार का विश्रंखलन आदि।

दहेज कथ्य द्रष्टव्य है – "एषः अस्ति वकीलः। पंचचत्वारिशंत् वर्षीय संभाव्यते त्रिचत: शतकम् अर्जयति मासिकम्। प्रथमा भार्या दिवंगता। तस्य त्रय पुत्राः। नास्ति तत्र यौतुकदानचिन्ता।"

मूल – लड़का वकील है, उम्र कोई पैंतालीस साल होगी। तीन–चार सौ की आमदनी है। पहली स्त्री मर चुकी है। उससे तीन लड़के भी हैं। यहाँ भी लेन–देन का झगड़ा नहीं है।

इस कथ्य में निर्मला के लिये वर रूप में पैतालीस वर्ष के तोताराम को चुना जाता है इसीलिये दहेज की कोई समस्या नहीं है। यह एक अत्यन्त प्रभावी कथ्य है। तोताराम पैतालींस वर्ष का है अन्यथा तो दहेज चाहिये था। बेमेल विवाह के कारण दहेज क्षम्य है।

मायाजाल श्री गुरूदत्त कृत एक ऐसा उपन्यास है जिसमें माया प्रपंच और छल सब कुछ है किन्तु बीच–बीच में दार्शनिक तथ्यों के द्वारा कथ्य को पुष्ट करने का प्रयास भी किया गया है इसका संस्कृत अनूदन डा. कैलासपति झा ने किया है। जिसके कथ्य बिन्दु है –

1. मायाजाल एवं सम्मोहिनी विद्या
2. अल्प सुविधा एवं कठिनाइयों से युक्त ग्राम्य जीवन
3. भारतीय संस्कृति के उपकारक तत्त्व–सेवा, सहायता, कर्त्तव्य आदि
4. कर्म एवं पुनर्जन्म
5. धर्म एवं अध्यात्म आदि।

सम्मोहिनी विद्या एवं मायाजाल विषयक कथ्य निम्नवत् है।

"एष मायाविनी विद्या अस्ति। एषा भवतां मनस्सु तादृशं मायाजालं प्रसारितवती अस्ति येन् यत् वस्तु भवन्तः द्रष्टुम् इच्छन्ति तत् एव दृश्यते।"

मेघवाहन गुरूदत्त जी का हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास है। इसका संस्कृत अनुवाद परमेशकुमार शर्मा ने किया है। इसके कथ्य बिन्दु निम्नवत् है।

1. कश्मीर के राजवंशों का इतिहास
2. मेघवाहन एवं उसकी राजनीति
3. वैष्णव, शाक्त, बौद्ध एवं शांकर मत
4. गुरू महत्ता
5. सांस्कृतिक एकता एवं उज्ज्वल भारत का भविष्य आदि।

कश्मीर के शासक **करमीर** का कथन निम्नवत् है।

"गोपादित्यः उक्तवान् शतात् वर्षेभ्य प्राक् कश्मीरस्य पूर्वशासकः खिखलान्य करमीरनामकः जन आसीत्। सः मगधस्य बौद्धसम्राजः अशोकवर्धनस्य भ्रातुः जलौकस्य वंशजः अशोकस्य परम्परायाः विपरीतः देवीभक्तः सन् अपि तस्य कीर्तेः उत्तराधिकारी आसीत्। तस्य बुद्धेः कार्यकुशलतायाः च कीर्तिः सम्पूर्णे भारतवर्षे वर्तते स्म।"

तुलसीदास कृत **रामचरितमानस** महाकाव्य का संस्कृत अनुवाद प. प्रेमनारायण द्विवेदी जी ने किया है। इसके कथ्य बिन्दु निम्नवत् है –

1. भारतीय संस्कृति का चरितार्थन
2. सर्वशक्तिमान एवं मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के जीवन के विविध पक्ष एवं घटनाएं
3. ऐतिहासिक राम–रावण युद्ध
4. लौकिक एवं पारमार्थिक कार्य–सिद्धि
5. मधुर लीलाओं के चिन्तन एवं कीर्तन से मोक्ष
6. भगवत्प्रेम में आसक्ति एवं ईश्वरीय भक्ति आदि।

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्ति प्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः।।

(अनू./राम/उत्तरकाण्ड/24/39)

'देश की हत्या' गुरूदत्त जी का हिन्दी उपन्यास है इसका संस्कृत अनुवाद श्री सोमदत्तः ने किया है। यह गुरूदत्त जी का देश पर आधारित अन्तिम उपन्यास है। इसके कथ्य बिन्दु निम्नवत् है

1. सन् 1947 में देश विभाजन एवं उसकी पृष्ठभूमि ।
2. गाँधीवाद की निन्दा एवं समर्थकों के दृष्टिकोण।
3. हिन्दू मुस्लिम एकता की दूषित विधि एवं देश विभाजन।
4. सन् 1947 की भयंकर घटनाएं ,ऐतिहासिक व्यक्ति एवं ऐतिहासिक तथ्य ।
5. कल्पना एवं सृजन का धरातल ।

विजयपर्व दृश्य अनूदित काव्य हिन्दी नाटककार डा. राम कुमार वर्मा द्वारा लिखित तथा डा. अभिराजराजेन्द्र मिश्र जी द्वारा संस्कृत में अनूदित है। यह नाटक कंलिग युद्ध एवं सम्राट अशोक की राजनीति पर आधारित है। कथ्य बिन्दु निम्न हैं –

1. राजधर्म एवं पारिवारिक विद्वेष
2. कंलिग युद्ध में हिंसा एवं करूण क्रन्दन
3. कन्या की महत्ता
4. कलाप्रियता एवं दार्शनिकता
5. बौद्धमत का प्रचार एवं प्रसार आदि।

विजय पर्व में संवाद मौलिक के सदृश ही अनूठे बन पड़े हैं।

सुगामः **क्वचिद् दूरे न भविष्यन्ति। किन्तु जानासि त्वं, कोऽस्य परिणामो भविष्यति?**
अशोकः **भ्रातृणां सङ्गमनस्य परिणामो न भवत्यभद्रः। एतावज्जानाम्यहम्।**
सुगामः **अशोक ! साहसिकस्त्वमसि। अतएव त्वयि जायते ममाऽनुकम्पा। नाहमिच्छामि यद् बन्धुक्रोधाग्नौ त्वं भस्मतामुपेयाः।।"**

इस उद्धरण में राजधर्म एवं पारिवारिक विद्वेष द्रष्टव्य है।

जयशंकर प्रसाद कृत **ध्रुवस्वामिनी** ऐतिहासिक नाटक है इसका अनुवाद प. श्री राम दवे ने किया है। इस नाटक में पुरूष सत्तामक समाज के शोषण के प्रति नारी विद्रोह के स्वर सुनाई पड़ते हैं। कथ्य बिन्दु निम्न है –

1. नारी के अस्तित्व, अधिकार और पुनर्लग्न की समस्या एवं उसका समाधान।
2. युद्ध नीति, नारी अनादर एवं ध्रुवस्वामिनी का समर्पण।
3. रामगुप्त का दौर्बल्य।
4. चन्द्रगुप्त का स्वाभिमान एवं नारी स्मिता की रक्षा आदि।

ध्रुवस्वामिनी कहती है कि गुप्त साम्राज्य क्या स्त्री–संप्रदान से बढ़ा है?

"ग,प्तसाम्राज्यं स्त्रीणां सम्प्रदानेन वृद्धिम गतम् ?" इस कथन में रामगुप्त का दौर्बल्य द्रष्टव्य है।

प्रत्येक कलाकार या रचनाकार अपनी अनुभूति और अपनी चिन्तनधारा को व्यक्त करने का एक साधन या माध्यम चुनता है। यही साधन और माध्यम शिल्प कहलाता है। 'शिल्प' का शाब्दिक अर्थ है किसी वस्तु के निर्माण का ढंग अथवा विधान या क्रिया। अमरकोश में शिल्प को 'कर्मकलादिकम्' कहा गया है। वामन शिवराम आप्टे के अनुसार शिल्प शब्द की व्युत्पत्ति शिल् + पक् से हुई है। (पृ. सं. 1018)

बृहत् हिन्दी कोश में शिल्प कला आदि कर्म, हुनर, कारीगिरी दक्षता, टेकनीक, शैली से अधिक व्यापक वह उपादान कहा है जिसके द्वारा रचनाकार अपनी भावनाओं को किसी विशेष ढंग से व्यक्त कर पाता हैं

शिल्प का प्रयोग दो रूपों में मिलता है– एक कौशलपूर्ण रचना और दूसरा मृदंगवादन एवं विभिन्न नृत्य कलाओं के अर्थ में। अतः यहाँ शिल्प का अभिप्रायः कौशलपूर्ण कला से है जिसमें अनूदित एवं मौलिक कृतियों में भाषा–शैली, छन्द, अलंकार, रसाभिव्यंजना, समास प्रयोग एवं बिम्ब एवं प्रतीक आदि कौशलों का अध्ययन किया जायेगा।

वैदिक काल से लेकर आज तक अधिकांश साहित्य छन्दात्मक हैं। गद्य का प्रचार होने पर भी पद्यात्मक साहित्य ही लोकप्रिय है। छन्द के बिना पद्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कवितावली और रामचरितमानस दोनों ही अनूदित ग्रन्थ पद्यबद्ध ग्रन्थ हैं। कवितावली और रामचरितमानस में तुलसीदास ने हिन्दी छन्दों, दोहा, सौरठा, चौपाई, सवैया, कवित्त आदि का प्रयोग किया है। अनूदित कवितावली में प. प्रेमनारायण द्विवेजी जी ने निम्न श्लोक में शार्दूल विक्रीडितम् का प्रयोग किया है यथा –

अनूदित कवितावली म स ज स त त ग

सोत्साहाः कवचावृता निशिचरा अश्वद्विपारोहिणी

लंकेशस्य बलान्विता बहुविधा नानायुधा भीषणाः।।

(कवि / लंका / 31–अ)

मूल – साजिकै सनाह गजगाह सउछाह दल,

महाबली धाये बीर जातुधान धीर के

इहाँ भालु बंदर बिसाल मेरू मंदर से,

लिये सैल सात तारि नीरनिधि–तीर के।।

काव्य में रस से तात्पर्य काव्यानन्द से है। **"रस्यते आस्वद्यते इति रसः"** अनूदित ग्रन्थों में रस की छटा वैसे ही परिलक्षित होती है जैसे मूल ग्रन्थों में होती है।

रामचरितमानस में काव्य स्वीकृत सभी रसों की सुन्दर योजना है। कवि तुलसीदास ने रामचरितमानस को अपने भक्त्यात्मक रस में प्रतिष्ठित कर दिया है। इसके अतिरिक्त स्थल–स्थल पर हास्य, वीर, रौद्र, श्रृंगार, भयानक, अद्‌भुत, करुण आदि रस है।

अनूदित रामचरितमानस में भयानक रस का एक उदाहरण द्रष्टव्य है।

ततो जगाम सक्रोधा दुष्टा सा रामसन्निधिम्।
भयंकरेण रूपेण तत्र प्रादुर्बभूवः च।।
नासाकर्णविहीना च सा बभूव भयावहा।
अस्त्रवन् गेरिकाधारा मन्ये पर्वतमस्तकात्।।

(अनू. राम च./अरण्य./4/33–34)

यहाँ शूर्पणखां के विकराल रूप के कारण भयानक रस है। विजयपर्व में युद्ध वर्णन द्रष्टव्य होने से वीर रस अधिक है। यथा –

"कलिंगेन सह युद्धावधौ ममायं ज्ञायते स्म यथा पाटलिपुत्रस्य शक्तेः समूद्रभूतः कश्चित्प्रलयो, यो हि कलिङ्‌गं शोणितसागरे निमजजपितुमिच्छति।"

अनूदित काव्यों में अलंकारों की छटा वैसे ही विद्यमान है जिस प्रकार मूल में प्रतीत होती है। रामचरितमानस, कवितावली, निर्मला, देशहत्या, मायाजालम् आदि अनूदित ग्रन्थों में शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों ही प्राप्त होते है –

पवनपाशि पावकाः प्रभाकरो हिमालयो
यमकाल लोकपाला भयान्मे प्रकम्पिता

(कविता/सु./29)

यह 'प' वर्ण की आवृत्ति है अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ ही सकल चराचर जगत् से हमें परिचित कराती हैं। आँख रूपाकृतियों से, कान विविध ध्वनियों से त्वचा शैत्यादि स्पर्शों से, घ्राण बहुविविध गन्धों से तथा जिह्वा मुधरादि स्वादों से हमे परिचित कराती है। ये ही परिचय सापेक्ष तत्त्व इन–इन ज्ञानेन्द्रियों के विषय अपनी एक अमिट छाप मानस पटल पर छोड़ जाते हैं। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अन्तःकरण पर पड़ने वाली यह छाया 'बिम्ब' के नाम से जानी जाती हैं। **"काव्य–बिम्ब ऐन्द्रियता के तत्त्व से युक्त शब्द चित्र होता है।"**

बिम्ब का माध्यम 'शब्द' होता है ।यह चित्रात्मक होता है, इसमें इन्द्रियानुभव होते हैं तथा मानवीय संवेदनाएँ सन्निहित रहती हैं। यह रूपात्मक अर्थात् मूर्त्त होता है। इस प्रकार ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर बिम्ब के निम्न भेद हैं –

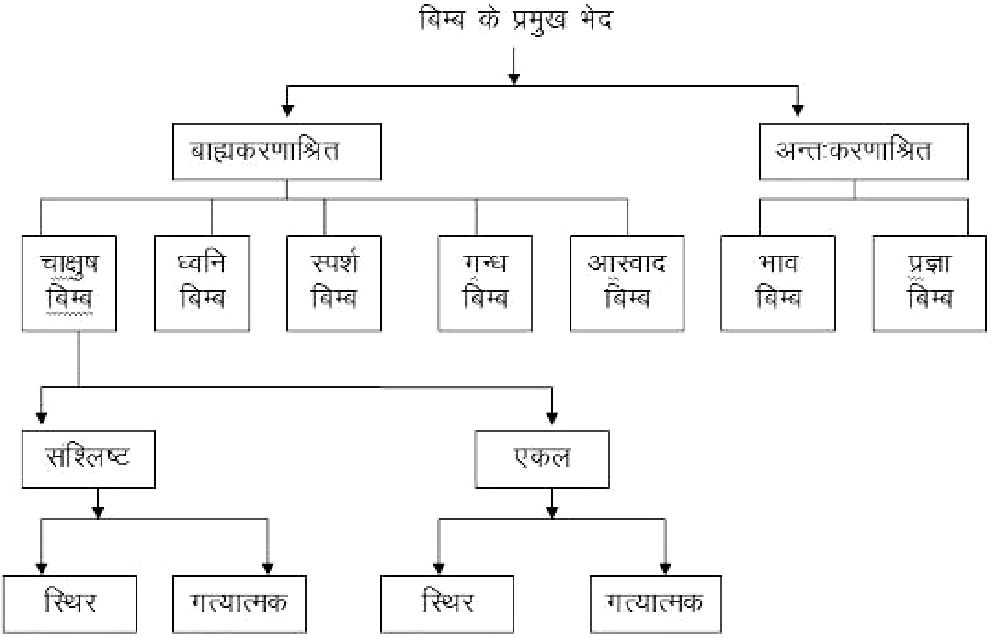

इसी प्रकार ध्वनि आदि अन्य बिम्बों के भी आठ–आठ भेद हो जायेंगे।

चाक्षुष बिम्ब : यह बिम्ब अत्यन्त प्रबल होता है। यह नेत्रेन्द्रिय की तृप्ति करता है। इसमें कवि स्त्री–पुरूष, बाल–वृद्ध, पशु–पक्षी, लता–विटप, नदी–पर्वत, सागर–सरोवर, गगन–भूतल, मेघ–विद्युत, सूर्य–चन्द्र, ग्रह–नक्षत्र आदि दृश्यमान् जगत् को विविध रूपों में सूक्ष्मातिसूक्ष्म बारीकियों से तथा कलात्म ढंग से सहृदयता के साथ उन्हें रूपायित करता हैं। वह युवक–युवतियों की विविध भाव–भंगिमाओं के, पशु–पक्षियों के विभिन्न मुद्राओं के, स्थिर जगत् की अनेक रूपाकृतियों के एवं गतिशील जगत् की बहुविविध हलचलों के बहुत से वर्णन चाक्षुष (चित्र) बिम्ब में करता है जो नेत्रेन्द्रिय के अनुकूल सजीव बन जाता है। ऐसा वर्णन प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनूदित रामचरितमानस में प्राप्त होता है।

गत्यात्मक बिम्ब :

तोयं वारि जलं जलं जलमिति प्रोचुर्भयाद व्याकुला।

धावन्त्यो ललना गजेन्द्रगतयः शुष्यत्सरोजाननाः।

अस्तव्यस्तविभूषणांगवसना राज्ञयो वहिः संस्थिता

श्चिन्ताया पतिता रूढन्ति नितरां धाता विधाताय किम्

(कविता / सुन्दर / 10अ)

सब रानियाँ व्याकुल होकर पानी–पानी चिल्लाएं जा रही थी और इधर से उधर भागी जा रहीं थी। गजगामिनी उन स्त्रियों के मुख कमल सूखे हुए हैं। भागते समय उन्हें अपने वस्त्रों तथा आभूषणों तक की सुध नहीं रह गई थी। यहाँ हलचल युक्त घटनाओं के द्वारा गत्यात्मक बिम्ब के दर्शन होते है।

प्रतीक विधान : 'प्रतीयते अनेन इति प्रतीकम्' अर्थात् जिससे प्रतीत हो या किसी वस्तु की अभिव्यक्ति हो वह प्रतीक है। प्रतीक का शाब्दिक अर्थ है – अवयव, अंग, पता, चिह्न, निशान। प्रतीक हमारे विचारों या भावों को मूर्त और स्पष्ट बनाने में सहायक होते हैं।

भाव या विचार के स्थानापन्न शब्द ही प्रतीक कहे जाते हैं। मानव जब अपनी जिज्ञासा को दूसरे के समक्ष स्पष्टतः प्रस्तुत नहीं कर पाता तब अपने सूक्ष्म तथा अर्द्ध स्पष्ट भावों की अभिव्यक्ति के लिये प्रतीक को माध्यम बनाता है।

कलौ कल्पद्रुमो राम–नाम कल्याणधाम च।

(अनू./श्रीमद/बालकाण्ड/5/26)

यहाँ कलयुग में कल्पतरू के दर्शन को राम के नाम और कल्याण –धाम का प्रतीक कहा हैं । रामचरितमानस में वटवृक्ष, रसालवृक्ष, अशोक वृक्ष आदि धार्मिक एवं मांगलिक प्रतीक हैं।

कथोपकथन; नाट्यकला का प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण अंग होता है। इसी के माध्यम से चरित्रों का विकास, उनके स्वभाव का दिग्दर्शन, वस्तु का विकास भाववर्द्धन तथा वातावरण की सृष्टि होती है। अभिनय, वेश–भूषा इत्यादि की सफलता कथोपकथनों एवं संवादों पर आधारित होती है। ध्रुवस्वामिनी नाटक में संवाद चुटीले, व्यंग्यपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण हैं। जैसा प्रवाह मौलिक साहित्य में है वैसे ही प्रवाहपूर्ण संवाद अनूदित साहित्य में प्राप्त होते हैं। यथा –

प्रतिहारी – (प्रविश्य सोद्वेगम्) किं भट्टारकमहोदयाः अत्र समागताः?

ध्रुवस्वामिनी – न मे अंचलेऽस्ति निलीनः। पश्यतु अन्विष्यतु कस्मिन्नपि कुंजे।

प्रतिहारी – अहो ! महादेवि ! क्षम्यताम् । किमपि आवश्यकं समरसम्बन्धिवृत्तं निवेदयितुं महाराजम् अन्विष्यन् अत्र आगतास्मि।

ध्रुवस्वामिनी – स्यात् अन्यत्र कुत्रापि। अत्र तु नास्ति।

मूल ध्रुवस्वामिनी

प्रतिहारी – भट्टारक इधर आये है क्या?

ध्रुवस्वामिनी – मेरे अंचल में तो छिपे नहीं हैं। देखो किसी कुंज में ढूँढो।

प्रतिहारी – अरे महादेवी क्षमा कीजिये। युद्ध सम्बन्धी एक आवश्यक संवाद देने के लिए महाराज को खोजती हुई में इधर आ गयी हूँ।

ध्रुवस्वामिनी – होंगे कहीं,यहाँ तो नहीं है।

विजयपर्व के संवादों में सूक्ति, लोकोक्तियों, मुहावरों एवं लोक प्रचलित कथनों एवं वाक्यों का समावेश हैं। सम्राट अशोक सुगाम से कहता है – **"तवाऽयं निरङ्कुशो वाग्विलासो राजवंशमर्यादायाः प्रातिकूल्यमाचरति। मगधराजनस्यौदार्यमिदं यदसौ त्वां क्वथमानतैलकटाहे न क्षिप्तवान्।"**

देशकाल एवं वातावरण की एकत्रता को अन्वितित्रय कहा जाता है। देश का तात्पर्य उस क्षेत्र–विशेष से होता है जिसमें नाटकों को अवस्थित किया जाता है। 'काल' जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि देश की भाँति एक सूक्ष्म अर्थ से युक्त है। काल नाटक की सीमाओं को अनेक प्रकार से उजागर करता है। वातावरण में देश तथा काल की बहुत सारी बातें समाविष्ट होती हैं। मानवीय परिवेश, पात्रों का संवाद विषय आदि वातावरण को निर्धारित करने वाले सशक्त घटक हैं। अतः देशकाल एवं वातावरण पृथक्–पृथक् होते हुए भी अप्रत्यक्ष रूप से एक ही है। यह एक दूसरे से प्रभावित होते हैं एवं एक–दूसरे को प्रभावित करते है। तीनों ही एक दूसरे के पूरक तत्त्व हैं।

विजयपर्व नाटक का काल 274ई. पू. तथा स्थान पाटलिपुत्र शोणनद का तट है। ऐसा वातावरण मौलिक के सदृश अनूदित में भी चित्रित हैं। यथा –

शोणनदस्य समतला भूमिः। मध्ये कश्चिदवनतो वृक्षो यस्य स्कन्ध आसनवत् उपवेशनार्थ प्रयोक्तुं शक्यते। दक्षिणेन च पर्याकुलशारवोऽन्यो वृक्षः यस्य द्वयोः शाखयोरेतावानवकाशो यत्तन्मध्ये चन्द्रबिम्बो द्रष्टुं शक्यते। स्थाने–स्थाने लघुबृहन्तो निष्कुटा य कदाचित् पादयोः संलग्ना जायन्ते। उर्वरत्वात् भूमिर्हरीतिम्ना परिपूर्णाऽस्ति।

विजयपर्व में बहुत सुन्दर परिवेश है प्रयोग की दृष्टि से भी मंचनीय है। नाटक में वस्त्र एवं वेशभूषा आदि पात्रों के अनुकूल हैं।

"सुगामस्य वस्त्राणि नीलानि, सुदत्ततस्य च पीतानि चीनांशुकनिर्मितानि। उभयोर्हस्त्योः कृपाणौ।"

विजयपर्व में राजभवन का चित्रण रंगमंच की दृष्टि से, नाटक में ऐसा चित्रित किया है कि वह दर्शक के समक्ष कोलाहल प्रस्तुत करता है।

अशोकः – कीदृशोऽहं कोलाहलः?
सुगामः – (सव्यङ्ग्यम्) अस्मिन्नेव कोलाहले तवेतिहासो भविष्यति प्रतिबिम्बितः
(नेपथ्ये, कश्चित् स्वरः – वध्यतामशोकः)
(अपरः स्वरः – अपसरतु पाटलिपुत्रकलङ्कः)
(तृतीयः स्वरः – अशोकं निगृह्णीष्व)
अशोकः – (सत्वरं कोलहालदिशायां सम्प्रेक्ष्य) एष प्रस्तुतोऽहम्।
(नेपथ्ये पुनरपि काहलं जायते)

अनूदित साहित्य; सम्पर्क माध्यम, दूसरी भाषा के साहित्य का परिचय, अन्य समाज तथा राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान, सम्प्रेषण का माध्यम, ज्ञान–विज्ञानार्जन का साधन, प्रतिभा का परिचय, किसी देश के साहित्य की संकल्पना का स्पष्टीकरण, मानव जाति के कल्याण में सहयोग, भावात्मक एकता का सेतु, मानव धर्म–प्रसार, नौकरी तथा स्वतन्त्र व्यवसाय का स्रोत, व्यापक वृद्धि का साधन तथा मनुष्य–मनुष्य के बीच दूरी को समाप्त करने का साधन, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को बढ़ावा देना आदि दृष्टियों से अत्यन्त उपयोगी है।

प्रारम्भ से ही मेरी रूचि अनूदित साहित्य में रही है। एम.ए. उत्तरार्द्ध में गीताजंलि के संस्कृत अनुवाद के अध्ययन के पश्चात् यह रुचि और अधिक प्रबल हो गई तभी से मेरे हृदय में अनूदित विषय पर शोधकार्य करने की इच्छा हो गई थी। अतः मैनें अपने शोधकार्य के लिये आधुनिक संस्कृत अनूदित काव्य कथ्य एवं शिल्प विषय का

चयन किया जिस पर अभी तक कोई शोध कार्य मेरे संज्ञान में नहीं आया है। विषय चयन करने से पूर्व जानकारी के लिये मैंने विविध विश्वविद्यालयों के शोध विषय का गहन अन्वेक्षण भी किया है। मेरे द्वारा दिल्ली साहित्य अकादमी ग्रन्थालय में भी अध्ययन किया गया। वहाँ से भी इस विषय पर कोई कार्य उपलब्ध न होने की अनौपचारिक स्वीकृति मिली। मैंने प्रो. रमाकान्त शुक्ल जी से भी परामर्श लिया। जिससे मुझे इस विषय पर कार्य करने का उत्साह और मनोबल प्राप्त हुआ।

आधुनिक समय में अनूदित साहित्य की पीडा बहुत हद तक रचना की प्रसव पीडा से जुड़ी हैं। अतः साहित्य को अनुवाद की आवश्यकता है इसलिए अनुवाद की पीडा को कम करने तथा अनुवाद की आवश्यकता को पूर्ण करने में यह **"आधुनिक संस्कृत अनूदितकाव्य : कथ्य एवं शिल्प"** अपनी विशेष भूमिका निर्वाह कर सकता है। अतः मैं विद्या की देवी माँ सरस्वती के श्री चरणों में अपने विषय का उद्देश्य और रूपरेखा स्वीकृति हेतु प्रस्तुत करती हूँ। आशा है कि विद्वज्जन मेरे इस प्रयास का अनुमोदन कर इस विषय को लेकर आगे कार्य करने अनुमति प्रदान करेंगे।

<u>रूपरेखा</u>

आधुनिक संस्कृत अनूदितकाव्य : कथ्य एवं शिल्प

भूमिका – (1)(क) शोध का शीर्षक एवं विषय
(ख) शोध–विषय की प्रासंगिकता
(ग) शोध–दृष्टि
(2)प्रकृत विषय पर अब तक हुए अनुसंधानों का अवलोकन

प्रथम अध्याय – काव्य एवं काव्यकार परिचय

(क) अनूदित ग्रन्थ परिचय

(ख) मौलिक ग्रन्थ परिचय

द्वितीय अध्याय – अनूदित अर्थ एवं परम्परा

(क) साहित्यिक अनूदन

(ख) साहित्येतर अनूदन

तृतीय अध्याय – कथ्य अवधारणा एवं अनूदित काव्यों का कथ्य

(क) श्रव्य अनूदित काव्यों का कथ्य

(ख) दृश्य अनूदित काव्यों का कथ्य

चतुर्थ अध्याय – शिल्प–स्वरूप एवं अनूदित काव्यों का शिल्प सौन्दर्य

(क) श्रव्य अनूदित काव्यों में शिल्प सौन्दर्य – भाषा–शैली, छन्द, अलंकार, रसाभिव्यंजना, समासप्रयोग एवं पदशैय्या, बिम्ब एवं प्रतीक आदि।

(ख) दृश्य अनूदित काव्यों में शिल्प सौन्दर्य – भाषा–शैली, छन्द, अलंकार, रसाभिव्यंजना, संवाद, अभिनेयता एवं रंगमंचीयता, बिम्ब एवं प्रतीक आदि।

पंचम अध्याय – आधुनिक अनूदित संस्कृत काव्यों का मानव समाज को प्रदेय।

उपसंहार

आधार ग्रन्थ

क्र.सं.	ग्रन्थ नाम	अनूदित ग्रन्थ एवं प्रकाशन	मूल ग्रन्थ एवं प्रकाशन
1.	श्रीमद्रामचरित मानसम्	प. प्रेमनारायण द्विवेदी, देववाणी – परिषद्, दिल्ली, आर–6, वाणी विहार नई दिल्ली – 110059, 2005	तुलसीदास टीकाकार–हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीता प्रेस, गोरखपुर – 273005, गोबिन्द भवन – कार्यालय, कोलकाता का संस्थान
2.	कवितावली	प. प्रेमनारायण द्विवेदी देववाणी – परिषद्, दिल्ली, आर–6, वाणी विहार नई दिल्ली – 110059, 2000	तुलसीदास
3.	निर्मला	प. श्रीराम दवे राष्ट्रिय संस्कृत साहित्य केन्द्र, 29–ए, माली कॉलोनी, चॉदपोल बाजार, जयपुर, 2004	मुंशी प्रेमचन्द मेधा बुक्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली – 110032, 2014
4.	मेघवाहनः	परमेश कुमार शर्मा संस्कृत भारती, मातामन्दिर गली, झण्डेवालान, नवदेहली – 110055, 2013	गुरूदत्त हिन्दी साहित्य सदन, 30/90, कनॉट सरकस, नई दिल्ली – 110001, 1995
5.	मायाजालम्	डा. कैलासपतिः झा संस्कृत भारती, मातामन्दिर गली, झण्डेवालान, नवदेहली – 110055, 2011	गुरूदत्त हिन्दी साहित्य सदन, 30/90, कनॉट सरकस, नई दिल्ली – 110001
6.	देश हत्या	सोमदत्तः, संस्कृत भारती, मातामन्दिर गली, झण्डेवालान, नवदेहली – 110055, 2013	गुरूदत्त हिन्दी साहित्य सदन, 30/90, कर्नाट सरकस, नई दिल्ली – 110001, 1990
7.	ध्रुवस्वामिनी	प. श्रीराम दवे हंसा प्रकाशन, जयपुर, 2007	जयशंकर प्रसाद हंसा प्रकाशन, जयपुर, 2007
8.	विजयपर्व	डा. अभिराजराजेन्द्र मिश्र संस्कृत भारती, 2011	डा. रामकुमार वर्मा

सहायक ग्रन्थ

9.	अनुवाद सिद्धान्त एवं व्यवहार	डा. अनुज प्रताप सिंह	ग्रन्थलोक प्रकाशन, 2008
10.	अनुवाद शास्त्र	हेमचन्द्र पाण्डे	तक्षशिला प्रकाशन, 2008
11.	सृजनात्मक साहित्य का अनुवादः स्वरूप एवं समस्याएं	डा. सुरेश सिंहल	सार्थक प्रकाशन, 100ए, गौतम नगर, नई दिल्ली, 1998
12.	अनुवाद अवधारणा और आयाम	डा. सुरेश सिंहल	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
13.	व्यवहारिक अनुवाद	एन.ई. विश्वनाथ अय्यर	प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1998

14.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा. दीप्ति कमल	राज पब्लिशिंग हाउस, 2008
15.	आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास	बलदेव उपाध्याय	चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
16.	कालिदास के साहित्य में बिम्ब – विधान	डा. भवानी दत्त काण्डपाल	शब्दश्री प्रकाशन, आगरा – 2, 1985
17.	प्रतीक–शास्त्र	परिपूर्णानन्द वर्म्मा	उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन, हिन्दी भवन, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ, 227001 1 – 1964, 2 – 1990
18.	भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र	डा. कपिलदेव द्विवेदी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
19.	छन्दोमंजरी	प. हरिदत्तशास्त्री	चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
20.	व्याकरणालंकार कौमुदी	डा. बाबू राम त्रिपाठी	महालक्ष्मी आर्ट प्रेस, आगरा
21.	भारती नाट्यशास्त्र और रंगमंच	डा. रामसागर त्रिपाठी	अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978
22.	रंगमंच और नाटक की भूमिका	लक्ष्मीनारायण लाल	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1965
23.	नाटक और रंगमंच	सीताराम झा श्याम	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना 2000
24.	नाट्यशास्त्र	आचार्य भरतमुनि	निर्णय सागर प्रेस, मुम्बई, 1984

कोश ग्रन्थ

25.	संस्कृत शब्दकोश	वामन शिवराम आप्टे	चौखम्बा संस्कृत सीरीज
26.	हिन्दी विश्वकोश	.	नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
27.	पारिजात कोशः	डॉ. ईश्वर चन्द्र शर्मा	परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली 2004

Websites

1. www.srijanshilpi.com
2. www.sahityakunj.net

3. www.sahitya-akademi.gov.in
4. www.sanskritbhashi.blogspot.in